



हनुमान् चालीसा-दोहा



<https://www.chalisa.online>

॥ हनुमान् चालीसा ॥

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि ।

वरणौ रघुवर विमलयश जो दायक फलचारि ॥

बुद्धिहीन तनुजानिकै सुमिरौ पवन कुमार ।

बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार ॥

ध्यानम्

गोष्ठदीकृत वाराण्शि मशकीकृत राक्षसम् ।

रामायण महामाला रत्नं वंदे-(अ)निलात्मजम् ॥

यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकांजलिम् ।

भाष्यवारि परिपूर्ण लोचनं मारुति नमत राक्षसांतकम् ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।

जय कपीशा तिहु लोक उजागर ॥ 1 ॥

रामदूत अतुलित बलधामा ।

अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥ 2 ॥

महावीर विक्रम बजरंगी ।

कुमति निवार सुमति के संगी ॥ 3 ॥

कंचन वरण विराज सुवेशा ।

कानन कुँडल कुंचित केशा ॥ 4 ॥

हाथवज्र औ ध्वजा विराजै ।

कांथे मूँज जनेवू साजै ॥ 5 ॥

शंकर सुवन केसरी नंदन ।

तेज प्रताप महाजग वंदन ॥ 6 ॥

विद्यावान गुणी अति चातुर ।

राम काज करिवे को आतुर ॥ 7 ॥

प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया ।

रामलखन सीता मन बसिया ॥ 8 ॥

सूक्ष्म रूपधरि सियहि दिखावा ।

विकट रूपधरि लंक जलावा ॥ 9 ॥

भीम रूपधरि असुर संहारे ।

रामचंद्र के काज संवारे ॥ 10 ॥

लाय संजीवन लखन जियाये ।

श्री रघुवीर हरषि उरलाये ॥ 11 ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बडायी ।

तुम मम प्रिय भरत सम भायी ॥ 12 ॥

सहस्र वदन तुम्हरो यशगावै ।

अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥ 13 ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा ।

नारद शारद सहित अहीशा ॥ 14 ॥

यम कुबेर दिग्पाल जहां ते ।

कवि कोविद कहि सके कहां ते ॥ 15 ॥

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा ।

राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥ 16 ॥

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना ।

लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥ 17 ॥

युग सहस्र योजन पर भानू ।

लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ 18 ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही ।

जलधि लांघि गये अचरज नाही ॥ 19 ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ 20 ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।

होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ 21 ॥

सब सुख लहै तुम्हारी शरणा ।

तुम रक्षक काहू को डर ना ॥ 22 ॥

आपन तेज सम्हारो आपै ।

तीनों लोक हांक ते कांपै ॥ 23 ॥

भूत पिशाच निकट नहि आवै ।

महवीर जब नाम सुनावै ॥ 24 ॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।

जपत निरंतर हनुमत वीरा ॥ 25 ॥

संकट से हनुमान छुडावै ।

मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥ 26 ॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।

तिनके काज सकल तुम साजा ॥ 27 ॥

और मनोरथ जो कोयि लावै ।

तासु अमित जीवन फल पावै ॥ 28 ॥

चारो युग प्रताप तुम्हारा ।

है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥ 29 ॥

साधु संत के तुम रखवारे ।

असुर निकंदन राम दुलारे ॥ 30 ॥

अष्टसिद्धि नव निधि के दाता ।

अस वर दीन्ह जानकी माता ॥ 31 ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा ।

सदा रहो रघुपति के दासा ॥ 32 ॥

तुम्हरे भजन रामको पावै ।

जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥ 33 ॥

अंत काल रघुपति पुरजायी ।

जहां जन्म हरिभक्त कहायी ॥ 34 ॥

और देवता वित्त न धरयी ।

हनुमत सेयि सर्व सुख करयी ॥ 35 ॥

संकट क(ह)टै मिटै सब पीरा ।

जो सुमिरै हनुमत बल वीरा ॥ 36 ॥

जै जै जै हनुमान गोसायी ।

कृपा करहु गुरुदेव की नायी ॥ 37 ॥

जो शत वार पाठ कर कोयी ।

छूटहि बंदि महा सुख होयी ॥ 38 ॥

जो यह पडै हनुमान चालीसा ॥ 39 ॥

होय सिद्धि साखी गौरीशा ॥ 39 ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।

कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥ 40 ॥

दोहा

पवन तनय संकट हरण - मंगल मूरति रूप ।

राम लखन सीता सहित - हृदय बसहु सुरभूप ॥

सियावर रामचंद्रकी जय । पवनसुत हनुमानकी जय । बोलो भायी सब संतनकी जय ।

|| <https://www.chalisa.online> ||